

भारतीय अर्थव्यवस्था पर जनसंख्या वृद्धि का प्रभाव: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ रमेश कुमार

असिस्टेंट प्रोफेसर (अर्थशास्त्र)

रामबचन सिंह राजकीय महिला महाविद्यालय बगली पिजड़ा मऊ।

सारांश

जनसंख्या किसी भी अर्थव्यवस्था के विकास की आधारभूत शक्ति भी हो सकती है और संसाधनों पर दबाव उत्पन्न करने वाला कारक भी। इसका वास्तविक प्रभाव जनसंख्या के आकार से अधिक उसकी आयु-संरचना, स्वास्थ्य, शिक्षा, कौशल, रोजगार तथा उत्पादकता पर निर्भर करता है। भारत स्वतंत्रता के बाद तीव्र जनसंख्या वृद्धि से गुजरा है। वर्ष 1951 में देश की जनसंख्या लगभग 36.11 करोड़ थी, जो 2011 की जनगणना तक लगभग 121 करोड़ हो गई। संयुक्त राष्ट्र के वर्ष 2025 के अनुमान के अनुसार भारत की जनसंख्या लगभग 146.39 करोड़ है। यद्यपि जनसंख्या का कुल आकार लगातार बढ़ा है, किंतु जनसंख्या वृद्धि की दर तथा प्रजनन दर में उल्लेखनीय गिरावट आई है। NFHS-5 के अनुसार भारत की कुल प्रजनन दर 2.0 बच्चे प्रति महिला तक आ चुकी है। बड़ी जनसंख्या भारत को विशाल श्रम-शक्ति, उपभोक्ता बाजार, उद्यमिता, बचत, निवेश और उत्पादन की संभावनाएँ प्रदान करती है। दूसरी ओर पर्याप्त रोजगार, स्वास्थ्य, शिक्षा, आवास और बुनियादी सुविधाओं के अभाव में यही जनसंख्या बेरोजगारी, प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव, शहरी भीड़, आय असमानता तथा सामाजिक व्यय में वृद्धि का कारण बन सकती है। प्रस्तुत शोध-पत्र द्वितीयक आँकड़ों पर आधारित है तथा इसका उद्देश्य भारतीय अर्थव्यवस्था पर जनसंख्या वृद्धि के सकारात्मक और नकारात्मक प्रभावों का संतुलित विश्लेषण करना है। अध्ययन का मुख्य निष्कर्ष यह है कि भारत की वास्तविक चुनौती केवल जनसंख्या वृद्धि को नियंत्रित करना नहीं है, बल्कि उपलब्ध मानव संसाधन को स्वस्थ, शिक्षित, कुशल और उत्पादक मानव पूँजी में परिवर्तित करना है।

मुख्य शब्द: जनसंख्या वृद्धि, भारतीय अर्थव्यवस्था, जनसांख्यिकीय लाभांश, बेरोजगारी, मानव पूँजी, शहरीकरण, प्रजनन दर, आर्थिक विकास।

1. प्रस्तावना

अर्थव्यवस्था और जनसंख्या का संबंध अत्यंत निकट है। आर्थिक उत्पादन के लिए श्रम की आवश्यकता होती है और वस्तुओं तथा सेवाओं के उपभोग के लिए उपभोक्ताओं की। इस दृष्टि से बड़ी जनसंख्या आर्थिक गतिविधियों के लिए अवसर प्रदान करती है। लेकिन यदि जनसंख्या की वृद्धि रोजगार, उत्पादन, स्वास्थ्य, शिक्षा और आधारभूत संरचना की वृद्धि से अधिक तेज हो जाए तो प्रति व्यक्ति उपलब्ध संसाधनों पर दबाव बढ़ सकता है। भारत में जनसंख्या का प्रश्न लंबे समय तक मुख्य रूप से “जनसंख्या विस्फोट” और परिवार नियोजन के संदर्भ में देखा जाता रहा। वर्तमान स्थिति इससे अधिक

जटिल है। राष्ट्रीय स्तर पर प्रजनन दर तेजी से घट चुकी है, लेकिन अतीत में उच्च जन्म दर के कारण बड़ी युवा आबादी अभी भी कार्यशील आयु में प्रवेश कर रही है। इसे **जनसंख्या-संवेग** कहा जाता है।

भारत सरकार की जनसंख्या प्रक्षेपण रिपोर्ट में अनुमान लगाया गया था कि देश की जनसंख्या 2011 के लगभग 121.1 करोड़ से बढ़कर 2036 में लगभग 151.8 करोड़ हो सकती है। रिपोर्ट के अनुसार इस अवधि में लगभग 31 करोड़ लोगों की शुद्ध वृद्धि संभावित है।

इसका अर्थ यह है कि प्रजनन दर कम होने के बावजूद आने वाले वर्षों में शिक्षा, रोजगार, स्वास्थ्य, आवास, परिवहन, ऊर्जा और शहरी आधारभूत सुविधाओं की मांग बढ़ती रहेगी।

अतः जनसंख्या वृद्धि का आर्थिक प्रभाव केवल नकारात्मक या सकारात्मक नहीं माना जा सकता। उचित नीति, निवेश और मानव पूँजी विकास के साथ बड़ी जनसंख्या आर्थिक शक्ति बन सकती है; इसके विपरीत कमजोर मानव विकास और सीमित रोजगार के वातावरण में यही जनसंख्या आर्थिक तथा सामाजिक दबाव पैदा कर सकती है।

2. जनसंख्या वृद्धि की अवधारणा

किसी निश्चित अवधि में जनसंख्या के कुल आकार में होने वाली वृद्धि को जनसंख्या वृद्धि कहा जाता है। इसका निर्धारण मुख्य रूप से जन्म दर, मृत्यु दर और प्रवासन से होता है।

सरल रूप में इसे इस प्रकार व्यक्त किया जा सकता है—

$$\text{जनसंख्या परिवर्तन} = \text{जन्म} - \text{मृत्यु} + \text{शुद्ध प्रवासन}$$

भारत जैसे विशाल देश में राष्ट्रीय स्तर पर दीर्घकालीन जनसंख्या परिवर्तन में जन्म और मृत्यु का प्रभाव प्रमुख रहा है।

आर्थिक दृष्टि से जनसंख्या वृद्धि का प्रभाव इस बात पर निर्भर करता है कि—

- कितने लोग कार्यशील आयु में हैं,
- कितने आश्रित हैं,
- कार्यशील लोगों की शिक्षा और कौशल का स्तर क्या है,
- अर्थव्यवस्था कितने रोजगार उत्पन्न कर रही है,
- श्रम की उत्पादकता कितनी है,
- महिलाओं की श्रम भागीदारी कितनी है,
- तथा जनसंख्या का भौगोलिक वितरण कैसा है।

इसलिए समान आकार की जनसंख्या वाले दो देशों में आर्थिक परिणाम बिल्कुल अलग हो सकते हैं।

3. भारत में जनसंख्या वृद्धि की प्रवृत्ति

भारत की आधुनिक जनसंख्या वृद्धि को समझने के लिए स्वतंत्रता के आसपास की स्थिति से वर्तमान अनुमान तक देखना उपयोगी है।

वर्ष	अनुमानित/जनगणना जनसंख्या
1951	लगभग 36.11 करोड़
1961	लगभग 43.92 करोड़
1971	लगभग 54.82 करोड़

वर्ष	अनुमानित/जनगणना जनसंख्या
1981	लगभग 68.33 करोड़
1991	लगभग 84.34 करोड़
2001	लगभग 102.70 करोड़
2011	लगभग 121.1 करोड़
2025	लगभग 146.39 करोड़, संयुक्त राष्ट्र अनुमान
2036	लगभग 151.8 करोड़, भारत सरकार का प्रक्षेपण

स्रोत: Census of India, Population Projections और United Nations.

1951 से 2011 के बीच भारत की जनसंख्या तीन गुना से अधिक हो गई। लेकिन केवल कुल संख्या देखने से वर्तमान जनसांख्यिकीय परिवर्तन को समझना संभव नहीं है।

NFHS-4 में भारत की कुल प्रजनन दर 2.2 बच्चे प्रति महिला थी, जो NFHS-5 (2019-21) में घटकर 2.0 हो गई। यह संख्या सामान्यतः मानी जाने वाली प्रतिस्थापन स्तर की प्रजनन दर लगभग 2.1 से नीचे है।

इस प्रकार भारत एक ऐसे चरण में है जहाँ जनसंख्या का कुल आकार अभी बढ़ रहा है, लेकिन प्रजनन स्तर और दीर्घकालीन वृद्धि दर में कमी आ रही है।

4. अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य हैं—

1. भारत में जनसंख्या वृद्धि की प्रमुख प्रवृत्तियों का अध्ययन करना।
2. जनसंख्या वृद्धि और आर्थिक विकास के संबंध का विश्लेषण करना।
3. रोजगार, आय, बचत और उपभोग पर जनसंख्या वृद्धि के प्रभाव को समझना।
4. कृषि, शिक्षा, स्वास्थ्य तथा आधारभूत संरचना पर इसके प्रभाव का अध्ययन करना।
5. जनसांख्यिकीय लाभांश की भारतीय अर्थव्यवस्था में संभावनाओं का विश्लेषण करना।
6. तीव्र शहरीकरण तथा प्राकृतिक संसाधनों पर जनसंख्या दबाव का अध्ययन करना।
7. भविष्य के लिए उचित नीतिगत सुझाव प्रस्तुत करना।

5. शोध पद्धति

प्रस्तुत शोध वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक प्रकृति का है। अध्ययन में द्वितीयक आँकड़ों का प्रयोग किया गया है।

प्रमुख स्रोतों में निम्न शामिल हैं—

Census of India, भारत सरकार की Population Projections for India and States 2011–2036, National Family Health Survey-5, Periodic Labour Force Survey 2023-24, Economic Survey 2023-24 और 2024-25, संयुक्त राष्ट्र के World Population Prospects तथा UNFPA की रिपोर्टें।

इस अध्ययन में 2025 के बाद उत्पन्न सांख्यिकीय आँकड़ों का उपयोग नहीं किया गया है।

6. भारतीय अर्थव्यवस्था पर जनसंख्या वृद्धि के सकारात्मक प्रभाव

6.1 विशाल श्रम-शक्ति की उपलब्धता

बड़ी जनसंख्या भारत को विशाल कार्यबल उपलब्ध कराती है। यदि इस कार्यबल को उचित शिक्षा और कौशल मिले तो यह उत्पादन, निर्माण, सेवा, कृषि, सूचना प्रौद्योगिकी और उद्यमिता में महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है।

PLFS 2023-24 के अनुसार 15 वर्ष और उससे अधिक आयु के व्यक्तियों की श्रम बल भागीदारी दर लगभग **60.1 प्रतिशत** और कार्यकर्ता जनसंख्या अनुपात लगभग **58.2 प्रतिशत** था। महिला श्रम बल भागीदारी दर भी 2017-18 के 23.3 प्रतिशत से बढ़कर 2023-24 में 41.7 प्रतिशत हुई। यह दर्शाता है कि भारत में बड़ी संख्या में लोग आर्थिक गतिविधियों से जुड़ने की क्षमता रखते हैं।

6.2 जनसांख्यिकीय लाभांश

जब किसी देश में बच्चों तथा वृद्ध आश्रितों की तुलना में कार्यशील आयु की जनसंख्या अधिक होती है, तब उस स्थिति को जनसांख्यिकीय लाभांश कहा जाता है।

भारत के लिए यह एक महत्वपूर्ण आर्थिक अवसर है।

आर्थिक सर्वेक्षण 2018-19 के अनुसार 20-59 वर्ष आयु वर्ग का हिस्सा 2011 में लगभग 50.5 प्रतिशत था और इसके 2031 में लगभग 58.8 प्रतिशत होने का अनुमान लगाया गया था।

उसी आर्थिक सर्वेक्षण ने अनुमान लगाया था कि कार्यशील आयु की जनसंख्या में 2021-31 के दौरान प्रतिवर्ष लगभग **97 लाख** तथा 2031-41 के दौरान प्रतिवर्ष लगभग **42 लाख** की वृद्धि हो सकती है।

यदि इस अतिरिक्त कार्यबल को उत्पादक रोजगार प्राप्त होता है, तो—

- राष्ट्रीय उत्पादन बढ़ सकता है,
- प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि हो सकती है,
- घरेलू बचत बढ़ सकती है,
- कर संग्रह बढ़ सकता है,
- निवेश की क्षमता बढ़ सकती है,
- तथा गरीबी कम करने में सहायता मिल सकती है।

लेकिन यह लाभ स्वतः प्राप्त नहीं होता। इसके लिए रोजगार और कौशल आवश्यक हैं।

6.3 विशाल उपभोक्ता बाजार

146 करोड़ से अधिक आबादी भारत को विश्व के सबसे बड़े उपभोक्ता बाजारों में स्थान देती है। भोजन, वस्त्र, आवास, शिक्षा, स्वास्थ्य, परिवहन, मोबाइल संचार, डिजिटल सेवाएँ और मनोरंजन जैसी वस्तुओं एवं सेवाओं की विशाल मांग घरेलू उद्योग के विस्तार को प्रोत्साहित करती है।

किसी भी कंपनी के लिए भारत की बड़ी आबादी एक विशाल संभावित बाजार है। यही कारण है कि दूरसंचार, ई-कॉमर्स, वित्तीय सेवाओं, उपभोक्ता वस्तुओं और ऑनलाइन शिक्षा जैसे क्षेत्रों में भारत का बाजार आकर्षक है।

बड़ी घरेलू मांग आर्थिक विकास को वैश्विक निर्यात मांग में होने वाले उतार-चढ़ाव से आंशिक सुरक्षा भी प्रदान कर सकती है।

6.4 उद्यमिता और नवाचार को प्रोत्साहन

युवा और बड़ी आबादी नए विचारों, नए बाजारों और नए व्यवसायों के लिए अनुकूल वातावरण उत्पन्न कर सकती है।

शिक्षित युवा यदि नौकरी खोजने के साथ स्वरोजगार और उद्यमिता को अपनाते हैं, तो जनसंख्या आर्थिक बोझ के स्थान पर उत्पादन तथा रोजगार सृजन का माध्यम बन सकती है।

भारत में तकनीकी सेवाओं, स्टार्टअप, वित्तीय प्रौद्योगिकी और डिजिटल व्यापार का विस्तार बड़ी युवा आबादी और बड़े घरेलू बाजार से भी जुड़ा है।

6.5 बचत और निवेश की संभावना

कार्यशील आयु में लोगों की संख्या अधिक होने पर परिवारों की आय तथा बचत क्षमता में वृद्धि हो सकती है। यह बचत बैंकिंग प्रणाली, वित्तीय बाजार और अन्य माध्यमों से निवेश में परिवर्तित होकर आर्थिक विकास को गति दे सकती है।

जनसांख्यिकीय लाभांश का यह प्रभाव तभी मजबूत होता है जब पर्याप्त लोग रोजगार में हों और उनकी उत्पादकता तथा वास्तविक आय बढ़ रही हो।

7. भारतीय अर्थव्यवस्था पर जनसंख्या वृद्धि के नकारात्मक प्रभाव

7.1 रोजगार सृजन पर दबाव

तेजी से बढ़ती कार्यशील जनसंख्या के लिए पर्याप्त रोजगार पैदा करना भारतीय अर्थव्यवस्था की सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक है।

PLFS 2023-24 में 15 वर्ष से अधिक आयु के लोगों की बेरोजगारी दर सामान्य स्थिति में 3.2 प्रतिशत दर्ज हुई। हालांकि बेरोजगारी की यह दर पूरी तस्वीर नहीं बताती क्योंकि रोजगार की गुणवत्ता, आय, कार्य के घंटे, स्वरोजगार तथा अल्परोजगार भी महत्वपूर्ण हैं।

विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में सीमित भूमि पर अधिक जनसंख्या होने से कई परिवारों में एक ही कृषि भूमि पर आवश्यकता से अधिक सदस्य कार्य करते हैं। ऐसी स्थिति छिपी बेरोजगारी या कम उत्पादकता का कारण बन सकती है।

इसलिए बड़ी जनसंख्या का लाभ तभी है जब रोजगार की संख्या के साथ उसकी गुणवत्ता भी सुधरे।

7.2 प्रति व्यक्ति संसाधनों पर दबाव

यदि राष्ट्रीय आय की वृद्धि जनसंख्या वृद्धि से पर्याप्त रूप से अधिक नहीं होती तो प्रति व्यक्ति आय की वृद्धि सीमित हो जाती है।

सरल रूप में—

प्रति व्यक्ति आय = राष्ट्रीय आय ÷ कुल जनसंख्या

मान लीजिए किसी अर्थव्यवस्था की वास्तविक आय 5 प्रतिशत बढ़ती है और जनसंख्या 1 प्रतिशत बढ़ती है। अन्य परिस्थितियाँ समान रहने पर प्रति व्यक्ति आय की वृद्धि राष्ट्रीय आय की वृद्धि से कम होगी।

अतः आर्थिक विकास का वास्तविक लक्ष्य केवल कुल GDP बढ़ाना नहीं बल्कि प्रति व्यक्ति उपलब्ध आय और जीवन स्तर बढ़ाना होना चाहिए।

7.3 कृषि भूमि पर दबाव

भारत की बड़ी ग्रामीण आबादी का एक बड़ा हिस्सा आज भी प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से कृषि पर निर्भर है।

जनसंख्या वृद्धि के कारण कृषि भूमि का पारिवारिक विभाजन होता है और जोत का आकार छोटा हो सकता है। बहुत छोटी जोत पर आधुनिक तकनीक, सिंचाई और मशीनों का आर्थिक उपयोग कठिन हो जाता है।

इसके परिणामस्वरूप—

- सीमांत खेती बढ़ सकती है,
- प्रति किसान आय सीमित हो सकती है,
- कृषि से गैर-कृषि क्षेत्रों की ओर पलायन बढ़ सकता है,

- तथा प्राकृतिक संसाधनों पर अतिरिक्त दबाव उत्पन्न हो सकता है।

अतः कृषि क्षेत्र में श्रम की अधिकता को विनिर्माण और सेवाओं में उत्पादक रोजगार की ओर स्थानांतरित करना आवश्यक है।

7.4 शिक्षा व्यवस्था पर दबाव

बड़ी युवा आबादी के कारण विद्यालय, महाविद्यालय, विश्वविद्यालय, कौशल केंद्र और प्रशिक्षित शिक्षकों की मांग बढ़ती है।

यदि शिक्षा व्यवस्था का विस्तार जनसंख्या के अनुरूप नहीं होता तो—

- कक्षाओं में भीड़ बढ़ सकती है,
- शिक्षक-विद्यार्थी अनुपात प्रभावित हो सकता है,
- गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुँच में असमानता बढ़ सकती है,
- और शिक्षा तथा रोजगार बाजार के बीच कौशल-अंतर उत्पन्न हो सकता है।

आर्थिक सर्वेक्षण 2023-24 ने उल्लेख किया कि भारत के युवा कार्यबल में औपचारिक रूप से कौशल-प्रशिक्षित लोगों का अनुपात केवल लगभग

4.4 प्रतिशत था।

यह तथ्य दिखाता है कि बड़ी युवा आबादी अपने आप आर्थिक लाभांश में परिवर्तित नहीं होती।

7.5 स्वास्थ्य सेवाओं की मांग

बढ़ती जनसंख्या अस्पताल, चिकित्सक, दवाओं, पोषण, स्वच्छता, मातृ-शिशु स्वास्थ्य और सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाओं की मांग बढ़ाती है।

आर्थिक सर्वेक्षण 2024-25 के अनुसार केंद्र और राज्यों का सामाजिक सेवाओं पर कुल व्यय वित्त वर्ष 2021 में लगभग ₹14.8 लाख करोड़ से बढ़कर वित्त वर्ष 2025 के बजट अनुमान में लगभग ₹25.7 लाख करोड़ हुआ। स्वास्थ्य संबंधी व्यय इसी अवधि में लगभग ₹3.2 लाख करोड़ से बढ़कर ₹6.1 लाख करोड़ होने का अनुमान था।

यह व्यय केवल जनसंख्या वृद्धि का परिणाम नहीं है; बढ़ती आय, सार्वजनिक नीति और बेहतर सेवाओं की मांग भी इसके कारण हैं। फिर भी बड़ी आबादी गुणवत्तापूर्ण सार्वभौमिक स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता को एक बड़े पैमाने की चुनौती बनाती है।

7.6 आवास और शहरी आधारभूत संरचना पर दबाव

जनसंख्या वृद्धि के साथ ग्रामीण-शहरी प्रवासन तेजी से बढ़ता है। रोजगार, शिक्षा और स्वास्थ्य की तलाश में लोग शहरों की ओर जाते हैं।

भारत सरकार की जनसंख्या प्रक्षेपण रिपोर्ट के अनुसार शहरी आबादी का हिस्सा 2011 के लगभग 31.8 प्रतिशत से बढ़कर 2036 तक लगभग 38.2 प्रतिशत होने का अनुमान है। रिपोर्ट का अनुमान है कि 2011 से 2036 के बीच कुल जनसंख्या वृद्धि का लगभग 73 प्रतिशत हिस्सा शहरी आबादी की वृद्धि से संबंधित हो सकता है।

इसके कारण शहरों में—

आवास, परिवहन, जलापूर्ति, स्वच्छता, बिजली, कचरा प्रबंधन और सार्वजनिक स्थानों की मांग तेजी से बढ़ सकती है।

यदि शहरी नियोजन अपर्याप्त हो तो झुग्गी-बस्तियाँ, यातायात जाम, प्रदूषण और महंगा आवास आर्थिक उत्पादकता को प्रभावित कर सकते हैं।

7.7 प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव

अधिक आबादी का अर्थ भोजन, पानी, ऊर्जा, भूमि और अन्य प्राकृतिक संसाधनों की अधिक मांग है।

इसका प्रभाव विशेष रूप से उन क्षेत्रों में अधिक गंभीर हो सकता है जहाँ—

- भूजल पहले से दबाव में हो,
- वर्षा अनिश्चित हो,
- वन क्षेत्र सीमित हों,
- भूमि का अत्यधिक उपयोग हो,
- अथवा शहरों में आबादी अत्यधिक केंद्रित हो।

उपभोग के तरीके भी महत्वपूर्ण हैं। इसलिए पर्यावरणीय दबाव को केवल जनसंख्या की संख्या से जोड़ना उचित नहीं; प्रति व्यक्ति उपभोग, उत्पादन तकनीक और संसाधन दक्षता भी महत्वपूर्ण कारक हैं।

7.8 गरीबी और आय असमानता

बड़े परिवारों में सीमित आय अधिक सदस्यों में विभाजित होने के कारण प्रति व्यक्ति उपभोग कम हो सकता है। गरीब परिवारों में यह स्थिति शिक्षा, स्वास्थ्य और पोषण में निवेश को प्रभावित कर सकती है।

कम आय और कम मानव पूँजी की यह स्थिति एक पीढ़ी से अगली पीढ़ी तक गरीबी के हस्तांतरण का कारण बन सकती है।

हालाँकि जनसंख्या वृद्धि को गरीबी का एकमात्र कारण नहीं माना जा सकता। रोजगार के अवसर, संपत्ति का वितरण, सामाजिक सुरक्षा, शिक्षा और क्षेत्रीय असमानताएँ भी गरीबी को निर्धारित करती हैं।

8. जनसंख्या वृद्धि और बेरोजगारी

भारत की जनसंख्या संबंधी बहस में रोजगार केंद्रीय स्थान रखता है।

PLFS 2023-24 के अनुसार—

- श्रम बल भागीदारी दर: 60.1 प्रतिशत
- कार्यकर्ता जनसंख्या अनुपात: 58.2 प्रतिशत
- बेरोजगारी दर: 3.2 प्रतिशत

इसके अतिरिक्त श्रम बाजार की एक महत्वपूर्ण विशेषता स्वरोजगार की अधिकता है। PLFS 2023-24 के अनुसार ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत पुरुषों में लगभग 59.4 प्रतिशत तथा महिलाओं में लगभग 73.5 प्रतिशत स्वरोजगार की श्रेणी में थे।

इसलिए भारत में नीति का उद्देश्य केवल बेरोजगारी की दर कम करना नहीं होना चाहिए। प्रश्न यह भी होना चाहिए कि रोजगार—

- नियमित है या अस्थिर,
- उचित आय देता है या नहीं,
- उत्पादक है या नहीं,
- सामाजिक सुरक्षा देता है या नहीं।

यदि नई कार्यशील आबादी कम उत्पादक रोजगार में ही समाहित होती है तो जनसांख्यिकीय लाभांश का पूरा आर्थिक लाभ प्राप्त नहीं होगा।

9. जनसंख्या वृद्धि और मानव पूँजी

जनसंख्या और मानव पूँजी में महत्वपूर्ण अंतर है।

जनसंख्या संख्या है, जबकि मानव पूँजी उस जनसंख्या की शिक्षा, स्वास्थ्य, कौशल, ज्ञान और उत्पादक क्षमता है।

एक करोड़ अशिक्षित और अस्वस्थ श्रमिक तथा एक करोड़ शिक्षित, स्वस्थ और कुशल श्रमिक आर्थिक दृष्टि से समान संसाधन नहीं हैं।

भारत के लिए इसलिए सबसे महत्वपूर्ण नीति यह है कि बड़ी युवा आबादी पर निम्न क्षेत्रों में निवेश हो—

शिक्षा + स्वास्थ्य + पोषण + कौशल + रोजगार

यदि यह शृंखला मजबूत होती है तो जनसंख्या आर्थिक विकास की शक्ति बन सकती है।

यदि यह शृंखला कमजोर रहती है तो बड़ी युवा आबादी बेरोजगारी और सामाजिक असंतोष की चुनौती भी पैदा कर सकती है।

10. जनसंख्या वृद्धि में क्षेत्रीय असमानता

भारत का जनसांख्यिकीय परिवर्तन सभी राज्यों में समान नहीं है।

NFHS-5 के अनुसार बिहार की कुल प्रजनन दर 3.0 और उत्तर प्रदेश की 2.4 थी, जबकि तमिलनाडु और केरल में यह 1.8, पंजाब और पश्चिम बंगाल में 1.6 तथा सिक्किम में लगभग 1.1 थी।

जनसंख्या प्रक्षेपण रिपोर्ट के अनुसार 2011-36 के दौरान भारत की कुल संभावित जनसंख्या वृद्धि का लगभग आधा हिस्सा बिहार, उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, पश्चिम बंगाल और मध्य प्रदेश में केंद्रित होने का अनुमान था।

इसका महत्वपूर्ण आर्थिक अर्थ है।

जिन राज्यों में युवा आबादी तेजी से बढ़ रही है, वहाँ—

- विद्यालय,
- कौशल केंद्र,
- विश्वविद्यालय,
- औद्योगिक निवेश,
- रोजगार
- और शहरी आधारभूत संरचना

की मांग अधिक होगी।

दूसरी ओर कम प्रजनन दर वाले कुछ राज्यों को भविष्य में वृद्ध होती आबादी और श्रमिकों की कमी जैसी अलग चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है।

इसलिए भारत के लिए एक समान जनसंख्या नीति पर्याप्त नहीं होगी।

11. बदलती जनसांख्यिकी: जनसंख्या वृद्धि से वृद्धावस्था की ओर

भारत के सामने केवल बढ़ती जनसंख्या की चुनौती नहीं है। भविष्य में वृद्ध आबादी का हिस्सा भी बढ़ेगा।

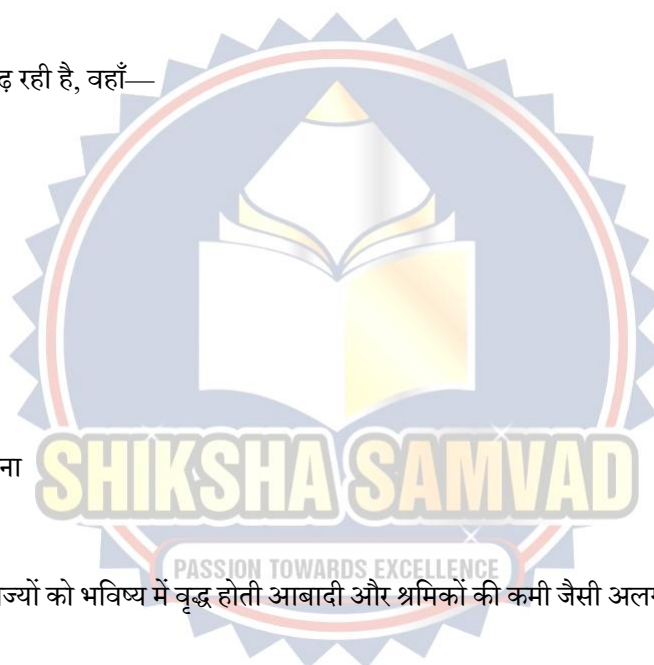
आर्थिक सर्वेक्षण में प्रस्तुत प्रक्षेपण के अनुसार 60 वर्ष और उससे अधिक आयु की आबादी का हिस्सा 2011 के लगभग 8.6 प्रतिशत से बढ़कर 2041 में लगभग 15.9 प्रतिशत हो सकता है।

UNFPA की *India Ageing Report 2023* ने भी संकेत दिया कि 2050 तक भारत में वृद्ध लोगों की हिस्सेदारी कुल आबादी के 20 प्रतिशत से अधिक हो सकती है।

इसका अर्थ है कि भारत को एक साथ दो प्रकार की नीतियाँ बनानी होंगी—

आज की युवा आबादी के लिए रोजगार और कौशल,

तथा भविष्य की वृद्ध आबादी के लिए स्वास्थ्य सेवा, पेंशन और सामाजिक सुरक्षा।



इस प्रकार वर्तमान जनसांख्यिकीय लाभांश स्थायी नहीं है। इसका उपयोग करने के लिए उपलब्ध समय सीमित है।

12. जनसंख्या वृद्धि का समग्र आर्थिक प्रभाव

जनसंख्या वृद्धि और आर्थिक विकास के संबंध को निम्न प्रकार से समझा जा सकता है—

अनुकूल परिस्थितियाँ	संभावित परिणाम
बड़ी युवा आबादी + शिक्षा	कुशल मानव संसाधन
कौशल + रोजगार	उत्पादन एवं आय में वृद्धि
आय + बचत	निवेश में वृद्धि
बड़ा बाजार	औद्योगिक विस्तार
महिला रोजगार	परिवार और अर्थव्यवस्था की आय में वृद्धि
उद्यमिता	नए रोजगार
मानव पूँजी निवेश	जनसांख्यिकीय लाभांश

इसके विपरीत—

प्रतिकूल परिस्थितियाँ	संभावित परिणाम
जनसंख्या वृद्धि + रोजगार की कमी	बेरोजगारी/अल्परोजगार
अधिक आबादी + सीमित भूमि	कृषि पर दबाव
शहरी वृद्धि + कमजोर योजना	भीड़ एवं अवसंरचना संकट
बड़ी युवा आबादी + कमजोर कौशल	कौशल-असंगति
कम आय + बड़ा परिवार	प्रति व्यक्ति संसाधनों में कमी
संसाधनों की बढ़ती मांग	पर्यावरणीय दबाव

इसलिए जनसंख्या अपने आप में न तो आर्थिक वरदान है और न अभिशाप। आर्थिक परिणाम संस्थागत और नीतिगत व्यवस्था निर्धारित करती है।

13. प्रमुख निष्कर्ष

अध्ययन के आधार पर निम्न प्रमुख निष्कर्ष सामने आते हैं—

प्रथम, भारत की जनसंख्या का कुल आकार अभी बढ़ रहा है, लेकिन जनसंख्या वृद्धि की गति घट रही है।

द्वितीय, NFHS-5 में राष्ट्रीय कुल प्रजनन दर 2.0 तक गिर चुकी है, जो भारत के जनसांख्यिकीय संक्रमण के उन्नत चरण की ओर संकेत करती है।

तृतीय, बड़ी कार्यशील आयु की आबादी भारत को महत्वपूर्ण जनसांख्यिकीय लाभांश प्रदान कर सकती है।

चतुर्थ, इस लाभांश का वास्तविक उपयोग रोजगार, कौशल, स्वास्थ्य और शिक्षा में पर्याप्त निवेश पर निर्भर है।

पंचम, जनसंख्या वृद्धि रोजगार, कृषि भूमि, जल, आवास, शिक्षा और स्वास्थ्य जैसी सेवाओं पर दबाव डालती है।

षष्ठ, जनसंख्या वृद्धि का स्वरूप सभी राज्यों में समान नहीं है। उत्तरी और मध्य भारत के कुछ राज्यों में अपेक्षाकृत युवा एवं तेजी से बढ़ती आबादी है, जबकि अनेक दक्षिणी तथा अन्य राज्यों में प्रजनन दर काफी कम हो चुकी है।

सप्तम, भविष्य में वृद्धावस्था भी भारत की एक महत्वपूर्ण आर्थिक चुनौती होगी। इसलिए नीति को केवल जनसंख्या नियंत्रण पर केंद्रित रखना पर्याप्त नहीं है।

अष्टम, महिला श्रम भागीदारी में वृद्धि भारत के जनसांख्यिकीय लाभांश को बढ़ाने का महत्वपूर्ण माध्यम हो सकती है।

14. सुझाव

भारत की जनसंख्या को आर्थिक शक्ति में परिवर्तित करने के लिए निम्न प्रयास आवश्यक हैं—

14.1 रोजगार सृजन को प्राथमिकता

विनिर्माण, कृषि-प्रसंस्करण, MSME, पर्यटन, डिजिटल सेवाओं, स्वास्थ्य एवं देखभाल अर्थव्यवस्था जैसे श्रम-प्रधान क्षेत्रों का विस्तार किया जाना चाहिए।

14.2 कौशल आधारित शिक्षा

शिक्षा को रोजगार बाजार से जोड़ा जाना चाहिए। विद्यालय और उच्च शिक्षा स्तर पर डिजिटल कौशल, तकनीकी शिक्षा, व्यावसायिक प्रशिक्षण और उद्यमिता को अधिक महत्व मिलना चाहिए।

14.3 महिलाओं की आर्थिक भागीदारी

महिलाओं के लिए सुरक्षित परिवहन, कार्यस्थल, बाल-देखभाल सुविधाएँ, डिजिटल कार्य और लचीले रोजगार अवसर विकसित किए जाने चाहिए।

14.4 स्वास्थ्य और पोषण में निवेश

स्वस्थ कार्यबल अधिक उत्पादक होता है। इसलिए मातृ स्वास्थ्य, बाल पोषण, प्राथमिक स्वास्थ्य तथा मानसिक स्वास्थ्य तक सुलभ पहुँच आवश्यक है।

14.5 जनसंख्या नीति में क्षेत्रीय दृष्टिकोण

उच्च प्रजनन दर वाले राज्यों में महिला शिक्षा, स्वास्थ्य और स्वैच्छिक परिवार नियोजन पर ध्यान दिया जाना चाहिए, जबकि कम प्रजनन दर तथा वृद्ध होती आबादी वाले राज्यों में वृद्धावस्था सुरक्षा और श्रम की उपलब्धता की योजना आवश्यक होगी।

14.6 नियोजित शहरीकरण

आने वाले दशकों में शहरी आबादी तेजी से बढ़ेगी। इसलिए सस्ते आवास, सार्वजनिक परिवहन, जल, स्वच्छता और रोजगार केंद्रों की पूर्व-योजना आवश्यक है।

14.7 कृषि से गैर-कृषि क्षेत्रों की ओर संरचनात्मक परिवर्तन

ग्रामीण श्रमिकों को केवल कृषि में सीमित रखने के बजाय खाद्य प्रसंस्करण, निर्माण, छोटे उद्योग, लॉजिस्टिक्स तथा सेवाओं में अवसर देने होंगे।

14.8 वृद्धावस्था की तैयारी

पेंशन, स्वास्थ्य बीमा, दीर्घकालीन देखभाल और वृद्ध-अनुकूल सामाजिक अवसंरचना का विकास अभी से आवश्यक है।

14.9 जनसांख्यिकीय डेटा में सुधार

समय पर और विश्वसनीय जनसंख्या आँकड़े नीति निर्माण के लिए आवश्यक हैं। राज्य, जिला तथा स्थानीय स्तर पर अद्यतन जनसांख्यिकीय आँकड़ों की उपलब्धता को मजबूत किया जाना चाहिए।

15. निष्कर्ष

भारतीय अर्थव्यवस्था पर जनसंख्या वृद्धि का प्रभाव बहुआयामी है। स्वतंत्रता के बाद तेज जनसंख्या वृद्धि ने देश के सीमित संसाधनों, कृषि भूमि, रोजगार, शिक्षा, स्वास्थ्य तथा आधारभूत संरचना पर निश्चित रूप से दबाव डाला है। दूसरी ओर इसी प्रक्रिया ने भारत को विशाल श्रम शक्ति और व्यापक घरेलू बाजार भी उपलब्ध कराया है।

वर्तमान परिस्थितियाँ अतीत से अलग हैं। भारत में कुल प्रजनन दर राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिस्थापन स्तर से नीचे आ चुकी है और जनसंख्या वृद्धि की दर धीरे-धीरे कम हो रही है। इसलिए वर्तमान नीति-विमर्श का केंद्र केवल जनसंख्या के आकार को सीमित करना नहीं होना चाहिए।

आने वाले वर्षों में वास्तविक प्रश्न यह होगा कि भारत अपनी विशाल युवा और कार्यशील आबादी को कितना स्वस्थ, शिक्षित, कुशल और उत्पादक बना पाता है।

यदि अर्थव्यवस्था पर्याप्त गुणवत्तापूर्ण रोजगार पैदा करती है, महिला श्रम भागीदारी बढ़ती है, शिक्षा और कौशल में सुधार होता है तथा स्वास्थ्य और आधारभूत संरचना में आवश्यक निवेश किया जाता है, तो बड़ी जनसंख्या भारत की आर्थिक शक्ति बन सकती है।

इसके विपरीत यदि शिक्षा और रोजगार का विस्तार जनसंख्या की आवश्यकताओं के अनुरूप नहीं हुआ तो बेरोजगारी, अल्परोजगार, क्षेत्रीय असमानता, शहरी दबाव और सामाजिक व्यय की चुनौती बनी रहेगी।

इसलिए भारतीय अर्थव्यवस्था की दीर्घकालीन सफलता का प्रश्न “जनसंख्या कितनी है?” से अधिक महत्वपूर्ण रूप से इस प्रश्न से जुड़ा है कि “जनसंख्या कितनी उत्पादक है?”

भारत के सामने उपलब्ध जनसांख्यिकीय अवसर सीमित अवधि का है। इसका सर्वोत्तम उपयोग मानव पूँजी निर्माण, रोजगार सृजन और समावेशी आर्थिक विकास द्वारा ही किया जा सकता है।

संदर्भ

1. भारत सरकार, रजिस्ट्रार जनरल और जनगणना आयुक्त का कार्यालय। (2011)। भारत की जनगणना 2011: जनसंख्या में दशक-दर-दशक बदलाव 1901–2011।
2. भारत सरकार, स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय। (2020)। भारत और राज्यों के लिए जनसंख्या अनुमान 2011–2036। राष्ट्रीय जनसंख्या आयोग।
3. स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय। (2023)। भारत में स्वास्थ्य और परिवार कल्याण आँकड़े 2023। भारत सरकार।
4. सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय। (2024)। आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण: वार्षिक रिपोर्ट, जुलाई 2023–जून 2024। भारत सरकार।
5. वित्त मंत्रालय। (2019)। आर्थिक सर्वेक्षण 2018–19। भारत सरकार।
6. वित्त मंत्रालय। (2024)। आर्थिक सर्वेक्षण 2023–24। भारत सरकार।
7. वित्त मंत्रालय। (2025)। आर्थिक सर्वेक्षण 2024–25। भारत सरकार।
8. संयुक्त राष्ट्र, आर्थिक और सामाजिक मामलों का विभाग, जनसंख्या प्रभाग। (2024)। विश्व जनसंख्या संभावनाएँ 2024। संयुक्त राष्ट्र।
9. संयुक्त राष्ट्र सांख्यिकी प्रभाग। (2025)। भारत: जनसंख्या और आर्थिक संकेतक। UN डेटा।
10. संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष और अंतर्राष्ट्रीय जनसंख्या विज्ञान संस्थान। (2023)। भारत एजिंग रिपोर्ट 2023: हमारे बुजुर्गों की देखभाल—संस्थागत प्रतिक्रियाएँ। UNFPA।

Cite this Article:

कुमार, डॉ रमेश. (2026). भारतीय अर्थव्यवस्था पर जनसंख्या वृद्धि का प्रभाव: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन. Shiksha Samvad International Open Access Peer-Reviewed & Refereed Journal of Multidisciplinary Research, ISSN: 2584-0983 (Online), Volume 03, Issue 03, Pp.382-393, March-2026. Journal

URL: <https://shikshasamvad.com/>



This is an Open Access Journal / article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License CC BY-NC-ND 3.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited. All rights reserved.





CERTIFICATE

of Publication

This Certificate is proudly presented to

डॉ रमेश कुमार

For publication of research paper title

भारतीय अर्थव्यवस्था पर जनसंख्या वृद्धि का प्रभाव: एक विश्लेषणात्मक
अध्ययन

Published in 'Shiksha Samvad' Peer-Reviewed and Refereed
Research Journal and E-ISSN: 2584-0983(Online), Volume-03,
Issue-03, Month March 2026, Impact Factor-RPRI-3.89/6.67

Dr. Neeraj Yadav
Editor-In-Chief

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Executive-chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and
the paper must be available online at: <https://shikshasamvad.com/>
DOI:- <https://doi.org/10.64880/shikshasamvad.v3i3.42>